हमारे पिछले पाठ में, हमने ईसाई धर्म की नींव का पता लगाया — कि यीशु मसीह स्वयं इसका आधारशिला हैं। शास्त्र उन्हें मुख्य आधारशिला (chief cornerstone) कहता है, वह चट्टान जिस पर पूरी आध्यात्मिक इमारत टिकती है। उनके बिना सच्चा ईसाई धर्म संभव नहीं है। वह हमारे विश्वास की नींव हैं और हमारे उद्धार के लेखक और परिपूर्णकर्ता हैं (इब्रानियों 12:2)।

“यीशु वह पत्थर है जिसे तुम, शिल्पकारों, ने अस्वीकार किया,
और वही अब आधारशिला बन गया है।”
— भजन संहिता 118:22; प्रेरितों के काम 4:11

किसी भी ठोस संरचना की तरह, एक बार नींव रख दी जाए, तो स्तंभ उठाने पड़ते हैं जो इमारत को सहारा और स्थिरता प्रदान करते हैं। ये स्तंभ पूरे आध्यात्मिक घर को टिकाए रखते हैं, ताकि वह तूफानों में भी अडिग रह सके।

एक ईसाई के रूप में, यीशु को अपनी नींव के रूप में स्थापित करने के बाद, आपको सात स्तंभों का निर्माण करना चाहिए जो आपके आध्यात्मिक जीवन की रूपरेखा बनाते हैं।

1. प्रेम (LOVE)

प्रेम सबसे प्रमुख स्तंभ है क्योंकि “ईश्वर प्रेम है” (1 यूहन्ना 4:8)। ईसाई प्रेम (अगापे) बिना शर्त, आत्म-त्यागपूर्ण और मानवीय स्नेह से परे है। यह ईश्वर के स्वभाव को दर्शाता है — एक ऐसा प्रेम जो देना, आशीर्वाद देना और उन लोगों को भी क्षमा करना चुनता है जो हमारे विरोध में हों।

“यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएँ बोलूँ, पर
प्रेम न रखूँ, तो मैं केवल शोरगुल करने वाला घंटा या टंकारने वाली झांझ हूँ।”
— 1 कुरिन्थियों 13:1

यह प्रेम ईसाई जीवन का सार है। यह आत्मा का फल है (गलातियों 5:22-23) और यही वह चिन्ह है जिससे दुनिया मसीह के अनुयायियों को पहचानती है (यूहन्ना 13:35)। प्रेम के बिना अन्य सभी कार्य शून्य हैं।

2. प्रार्थना (PRAYER)

प्रार्थना विश्वासी का ईश्वर से सीधे संवाद का माध्यम है —

आध्यात्मिक जीवन के लिए आवश्यक। प्रार्थना के माध्यम से हम ईश्वर के साथ अंतरंगता विकसित करते हैं, मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं, दूसरों के लिए मध्यस्थता करते हैं, और कठिनाइयों को सहन करने की शक्ति पाते हैं।

“प्रार्थना में दृढ़ बने रहें, कृतज्ञता के साथ जागरूक
रहें।”
— कुलुस्सियों 4:2

यीशु ने प्रार्थना का जीवन उदाहरण दिया (लूका 5:16), और हमें लगातार और विश्वास के साथ प्रार्थना करने की शिक्षा दी (लूका 18:1-8)। प्रेरितों ने भी प्रार्थना को चर्च के जीवन और मिशन की नींव माना।

3. शास्त्र (THE WORD / SCRIPTURE)

ईश्वर का वचन जीवित और सक्रिय है (इब्रानियों 4:12) — जिसके माध्यम से हम पोषण, सुधार और हर अच्छे कार्य के लिए सुसज्जित होते हैं (2 तीमुथियुस 3:16-17)। शास्त्र में डूबना हमें ईश्वर की इच्छा को समझने और मसीह में बढ़ने के लिए आध्यात्मिक रीढ़ प्रदान करता है।

“सभी शास्त्र ईश्वर से प्रेरित हैं और शिक्षा, पृष्टि,
सुधार और धार्मिकता के प्रशिक्षण के लिए लाभकारी हैं।”
— 2 तीमुथियुस 3:16

एक स्वस्थ ईसाई जीवन नियमित रूप से बाइबल के साथ जुड़ाव पर निर्भर करता है, जो सृष्टि से लेकर रहस्योद्घाटन तक ईश्वर की मुक्ति योजना को प्रकट करता है।

4. मिलन (FELLOWSHIP)

ईसाई धर्म अकेले यात्रा करने वाला नहीं है। ईश्वर ने हमें समुदाय के लिए बनाया है, जहां विश्वासी एक-दूसरे को प्रोत्साहित, सुधार और सशक्त करते हैं।

“एकत्रित होने में लापरवाही न करें, जैसा कुछ लोग करते हैं, बल्कि एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें।”
— इब्रानियों 10:25

प्रारंभिक चर्च इसका उदाहरण था, जो लगातार शिक्षा, रोटी तोड़ने और प्रार्थना के लिए इकट्ठा होता था (प्रेरितों के काम 2:42)। मिलन अलगाव, निराशा और भ्रांति से बचाता है और प्रेम व उत्तरदायित्व को बढ़ावा देता है।

5. पवित्रता (HOLINESS)

पवित्रता ईश्वर का स्वभाव और उनके लोगों के लिए उनका आह्वान है। विश्वासी को अलग-थलग — पवित्र — किया गया है ताकि वह शब्द और कर्म में ईश्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित कर सके।

“जिसने तुम्हें बुलाया वह पवित्र है, वैसे ही तुम भी सभी व्यवहार में पवित्र रहो।”
— 1 पतरस 1:15-16

ईसाई जीवन निरंतर पवित्रता का आह्वान है, जिसे पवित्र आत्मा के द्वारा शक्ति मिलती है, जिससे हम पाप पर विजय पाएं और मसीह के समानता में बढ़ें।

6. सुसमाचार प्रचार (EVANGELISM)

सुसमाचार प्रचार मुक्ति का स्वाभाविक विस्तार है — यह सुसमाचार साझा करने का आदेश और आनंद है। महान आदेश (मत्ती 28:18-20) ईसाई मिशन का केंद्र है, जो शिष्य बनाने पर जोर देता है।

“वे जो बिखरे हुए थे, वे शब्द का प्रचार करते घूमते थे।”
— प्रेरितों के काम 8:4

हर विश्वासी को गवाह बनने के लिए बुलाया गया है, आत्मा से समर्थित (प्रेरितों के काम 1:8), ताकि अन्य लोगों को ईश्वर के राज्य में लाया जा सके।

7. दान (GIVING)

ईश्वर परमदाता हैं, जो अनुग्रह और मुक्ति को स्वतंत्र रूप से प्रदान करते हैं। ईसाई भी ईश्वर की नकल करते हुए उदारतापूर्वक देते हैं, मंत्रालय का समर्थन करते हैं और जरूरतमंदों की देखभाल करते हैं।

“हर कोई वैसा ही दे जैसा उसने अपने हृदय में ठाना है,

हिचकिचाते या मजबूर होकर नहीं, क्योंकि ईश्वर प्रसन्न हृदय वाले दाता को प्रेम करते हैं।”
— 2 कुरिन्थियों 9:7

दान पूजा और विश्वास का कार्य है, जो ईश्वर की व्यवस्था को स्वीकार करता है और उनकी पृथ्वी पर कार्य में भाग लेता है।

सारांश

यदि हम अपने आध्यात्मिक जीवन को इन सात स्तंभों — प्रेम, प्रार्थना, शास्त्र, मिलन, पवित्रता, सुसमाचार प्रचार, और दान — पर सच्चाई से निर्मित करें, तो हमारा विश्वास एक मजबूत घर की तरह होगा, जो हर तूफान के सामने अडिग रहेगा।

“जो कोई मेरी इन बातों को सुनता है और उनका पालन करता है, वह
उस बुद्धिमान व्यक्ति के समान होगा जिसने अपने घर को चट्टान
पर बनाया।”
— मत्ती 7:24

आपका विश्वास मजबूत हो और आपका जीवन ईश्वर की महिमा बढ़ाए जब तक

कि यीशु मसीह वापस न लौटें।

ईश्वर आपका भला करे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp